Nai Dunia (Indore), 24th November 2021, Page-3

आइआइटी इंदौर | देश का पहला संस्थान जहां बन रहा ग्लोबल पेंडेमिक हब

शोध बढ़ाने जुटा रहे इलेक्ट्रानिक डाटा

इंदौर (नईदुनिया प्रतिनिधि)। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआइटी) इंदौर अपने इलेक्ट्रानिक डाटा को लगातार बढ़ाता जा रहा है। कोरोना महामारी में संस्थान ने बेहतर कदम उठाते हुए दुनियाभर की किताबें और जर्नल विद्यार्थियों को उपलब्ध करा दीं। इसका लाभ हमेशा मिलता रहेगा। कंप्यूटर विज्ञान, इलेक्ट्रानिक्स, सिविल, मैकेनिकल इंजीनियरिंग विषयों के साथ ही एस्ट्रोनामी और अन्य कई विषयों की दो लाख से ज्यादा इलेक्ट्रानिक किताबें उपलब्ध हो गई हैं। इसका लाभ महामारी के दौरान विद्यार्थियों को सबसे ज्यादा मिला।

अधिकारियों का कहना है कि इन किताबों तक विद्यार्थियों की पहुंच होने से शोधार्थियों को भी यह पता लगने लगा है कि वे जो शोध कर रहे हैं, उससे संबंधित काम किन देशों में हो रहे हैं। इससे प्राध्यापकों को भी लाभ हो रहा है। शोध के क्षेत्र में आइआइटी इंदौर अन्य आइआइटी से बेहतर कर रहा है। ग्लोबल पेंडेमिक हब के लिए संस्थान ने संयुक्त राष्ट्र संघ के साथ समझौता किया है। ऐसे में संस्थान को दुनियाभर के संसाधनों की जरूरत पड़ रही है। यही कारण है कि संस्थान ने ज्यादा से ज्यादा ज्ञान अर्जित करने के लिए दुनियाभर की इलेक्ट्रानिक किताबें और जर्नल प्रकाशित करने वाली कंपनियों से समझौता कर लिया है। इसकी पूरी जानकारी देने के लिए संस्थान ने अपनी वेबसाइट पर अलग से पेज बना लिया है।

तैयारी

- इलेक्ट्रानिक डाटा को विद्यार्थियों की पहुंच में लाने की कोशिश
- कई विषयों की आधुनिक प्रयोगशालाएं आइआइटी में की जा चुकी हैं स्थापित

शोध का दायरा बढ़ रहा

संस्थान के निदेशक प्रो. नीलेश कुमार जैन का कहना है कि कोरोना महामारी में भी हमने कई चुनौती भरे काम किए हैं। इसमें स्थानीय प्रशासन को उपकरण उपलब्ध कराने के साथ महामारी से लड़ने के वैज्ञानिक तरीकों पर भी बात हुई। एस्ट्रोनामी जैसे विषय शुरू किए हैं, जिसमें भी कई उपकरण और शोध साधनों की जरूरत होती है। सभी तरह की आधुनिक लैब अब आइआइटी में स्थापित हो चुकी हैं। महामारी पर शोध करने के लिए ग्लोबल पेंडेमिक हब तैयार किया जा रहा है। संस्थान में शोध का दायरा बढ़ता जा रहा है। इन सभी बातों को देखकर संस्थान ने कोरोना महामारी के दौरान कई और नामी संस्थानों के साथ ज्ञान का आदान-प्रदान करने के लिए समझौता किया है। इसमें इलेक्ट्रानिक डाटा भी बड़ी संख्या में संस्थान ने विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध कराया है। समय-समय पर अपडेट भी किया जा रहा है।